।। सप्त गुरा को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ सप्त गुरा को अंग लिखंते ||

|| साखी ||

बाप माय गुरू पेल है || सुणज्यो सब संसार ||
रगत बुंद सुखराम क्हे || बिगसी धात बिचार ||१||

माता पिता यह पहले गुरु है यह सभी संसारी नर नारी समजो । माताका खुन व पिताका बुंद इससे मनुष्य देह बना । पिता का धातू नही निकलता था तो मनुष्य देह मिलता ही नही था । इसलिए माता पिता ये पहले गुरु है ।||१||

फिर सुणज्यो गुण ओ करे || दस दिन पाळे देह ||
अन्न जळ सो सुखराम के || बाळक लग मुख लेह ||२||

माता दस दिन देह का पालन करती है । अन्न जल मुख मे देती है ।||२||

मात पिता गुर अे सही || तिण मे फेर न सार ||
मोख मिले सुखराम के || वे गुरू ओर बिचार ||३||

इस प्रकार माता व पिता ये पहले गुरु है । इसमे कोई फरक नही समजो परन्तु काल से मोक्ष मिलता वह गुरु माता पिता इन पहले गुरुसे न्यारा है उसका सभी ने विचार करना ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।||३||

दुजो गुरू सुखराम के || दाई है जुग माय ||
मळ मुत्र सुं काड कर || लीयो कंठ लगाय ||४||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले,जगत मे हर किसी का दुजा गुरु दाई है । दाई जीवको मल मुत्र से निकालकर कंठको लगाती है ।||४||

दस दिन कर हे चाकरी || न्हाय झुलावे आण ||
दाई गुर सुखराम केह || इता गुणा बखाण ||५||

दस दिन नहलाना,मल मुत्र से साफ करना,झुले मे सुलाना,झुलाना आदि काम करती है ||५||

दाई गुरू गुण अे किया || सुणज्यो सब संसार ||
पार लंघे सुखराम के || सो गुरू करो बिचार ||६||

इसलिए दाई यह सभी नर नारीयो का दुजा गुरु है । दाई ये उपरोक्त सभी गुण करती है परन्तु पार नही लंघा सकती । सुख पानेके लिए काल के पार लंघाऐंगे ऐसे गुणधारी सतगुरु का बिचार करो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले।||६||

तीजा गुर सुखराम के || बिपर कहिये जाण ||
वे दाता इण बस्त का || नाव कडावे आण ||७||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले बिप्र यह सभी नर नारीयोका तीजा गुरु है । वह शरीर का नाम निकालने का दाता है ।||७||

बामण गुरू सुखराम के ।। इण देहि का होय ।।
जामण मरणे चाहिये ।। ता गुण पुजे लोय ।।८।।

इसप्रकार ब्राम्हण ये इस देह का तीजा गुरु है परन्तु जन्म मरण मिटाना चाहते हो तो जिसमे जन्म मरण मिटाने का गुण है उसे सभी नर नारी पुजो ।।।।।

ब्राम्हण गुरू सुखराम के ।। सुनज्यो सब नर नार ।।
देह को पाडयो नाम रे ।। ओ फळ दियो बिचार ।।९।।

इसप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नरनारीसे बोले,ब्राम्हण ने देह नाम देने का फल दिया ।।।९।।

मात पिता गुर बुंद का ।। दाई गुरू सम्पडाय ।।
ब्राम्हण गुरू सुखराम के ।। नाव पडायो आय ।।१०।।

माता-पिता ने देह देनेका फल दिया,दाई ने शरीर को नहलाया,धुलाया,साफ सुत्रा रखनेका फल दिया,ब्राम्हण ने देह नाम देने का फल दिया इसप्रकार देह के तीन गुरु बने ।।।१०।।

अे तीनुं गुरू हद का ।। बेहद का गुर नाय ।।
ब्राम्हण सुंण सुखराम के ।। जती बेद का कुवाय ।।११।।

माता-पिता,दाई,ब्राम्हण ये तिनो गुरु हदके सुख देनेवाले है । बेहद का सुख देनेवाले नही है । ब्राम्हण वेद के आधारसे नाम व जात बताते ।।।११।।

ब्राम्हण पाडे नांव रे ।। जती पढावे आण ।।
अे गुर तो सुखराम के ।। यां चीजा का जाण ।।१२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ब्राम्हण वेद के आधारसे जाती बताते है । इसप्रकार ब्राम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरु उपरोक्त चिजोके है मोक्ष देनेवाले नही है ।।।१२।।

आयस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।
अे बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।

आयस,स्वामी ढुँढीया,बैरागी इन्हे गुरु कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ये गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।

षट दर्शण बेराग रे ।। अे देह का गुर जाण ।।
अेकूं को गुण करत हे ।। सब ही हद का आण ।।१४।।

इसप्रकार के ब्राम्हण पकड्के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रखनेका एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।

षट दर्शण गुर देह का ।। दिन मे करो पचास ।।
बिन सत्तगुरू सुखराम केहे ।। झूठ मुगत की आस ।।१५।।

इसप्रकार ये षटदर्शन(जोगी,जंगम,सेवडा,सन्यासी,फकीर,ब्राम्हण)गुरु देह गुरु है,ये यदी दिनके पचास भी किए तो मुक्ती होगी । ये अगर दिन के पचास भी किए तो भी मोक्ष नही होगा । ये सब गुरु मोक्ष की झुठी आस लगाते । मोक्ष सिर्फ सतगुरु करने पे ही मिलता है ।।।१५।।

जंतर अंतर अकल रे ।। लख चीजा दे आण ।।
भेद बिना सुखराम के ।। सब देह का गुरू जाण ।।१६।।

ये हद के गुरु जंतर मंतर,अक्कल ऐसी तीन लोक चौदा भवन तक लक्षावधी पर्चे चमत्कार की चीजा लाकर बताते । इनके पास काल से छुटनेका भेद नही रहता । इसलिए ये सभी देह के गुरु जाणिए ।।।१६।।

देह का गुरू सुं मुगत रे ।। सुण देही की होय ।।
आतम की सुखराम केहे ।। सत्तगुर के संग जोय ।।१७।।

इन देही के गुरुसे देही की मुक्ति होती,जिवात्मा की नही होती है । जीवात्मा की मुक्ति चाहिए हो तो सतगुरु का संग करना चाहिए ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।१७।

भेद बिना सुखराम के ।। सब देह का गुरू होय ।।
करणी की सुण क्या चली ।। नाव रटावे कोय ।।१८।।

काल से छुटने के भेद बिना आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले,सभी गुरु देह के गुरु है । ये गुरु करणीयाँ सिखाते है । यहाँ तक की हदतक पहुँचने का नाम भी सिखाते है परन्तु हदके बाहर सुखके बेहद मे नही पहुँचाते ।।।१८।।

सत्तगुर हे इण जीव का ।। सुणज्यो ग्यानी लोय ।।
दूजा गुरू सुखराम के ।। सब देही का होय ।।१९।।

सभी ज्ञानी सुनो इस जीवका गुरु सिर्फ सतगुरु है,दुजे सभी गुरु देहीके है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।१९।।

मोख मिलण की चाय व्हे ।। तो सत्तगुर कीज्यो आय ।।
दुजा गुर सुखराम के ।। सब ही कर्म उपाय ।।२०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयो को बोले की,मोक्ष मिलने की चाहणा है तो सतगुरु को खोजकर धारण करो । सतगुरु छोड्के दुजे सभी गुरु काल के मुख मे रखनेवाले कर्मोका उपाय है ।।।२०।।

।। इति सप्तगुरा को अंग संपूरण ।।